

एक निराली रस्सा-कशी

नाइजीरिया की लोककथा



यह कहानी नाइजीरिया की एक लोककथा है जिसे लेट्टा स्कैट्स ने यहाँ एक नये रूप में सुनाया है.

जंगल के दो बड़े और शक्तिशाली पशु, दरियाई घोड़ा और हाथी, एक खरगोश की हंसी उड़ाते थे और उसका अपमान करते थे क्योंकि वह बहुत छोटा था. दोनों बहुत ही घमंडी थे और उन्होंने खरगोश को परेशान कर रखा था. लेकिन एक दिन खरगोश ने दोनों को चुनौती दी कि उसके साथ रस्सा-कशी का मुकाबला करें.

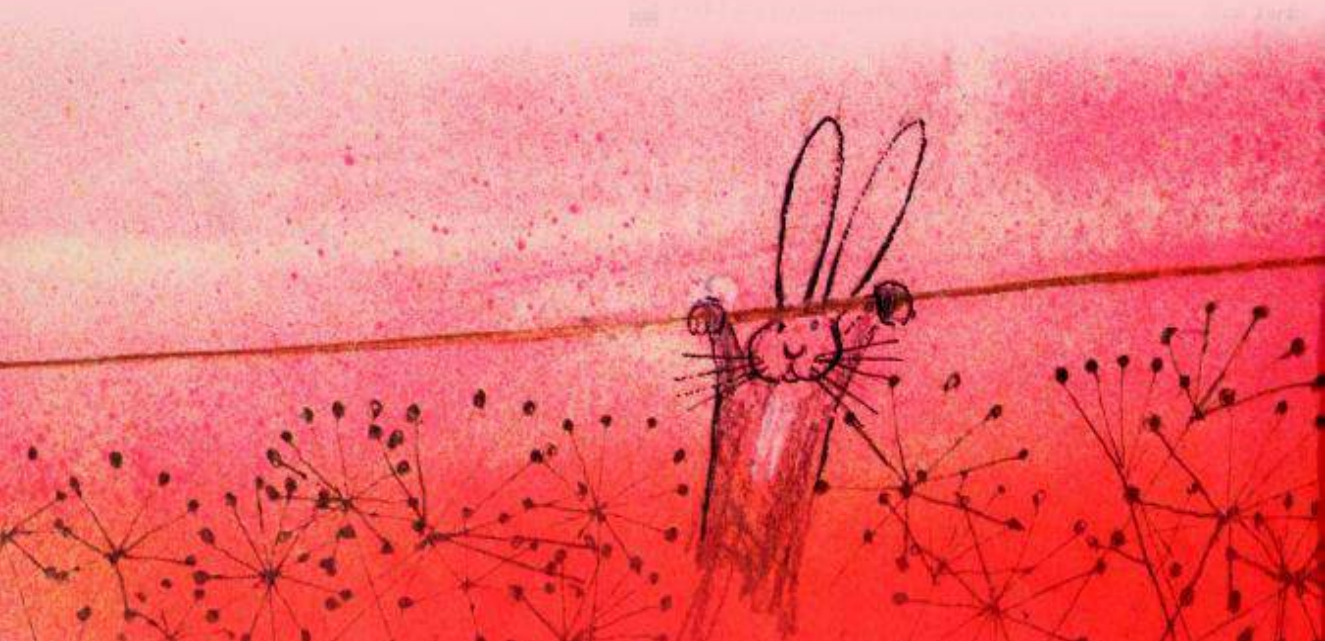
खरगोश ने अपनी चतुराई से दोनों को खूब बुद्धू बनाया.

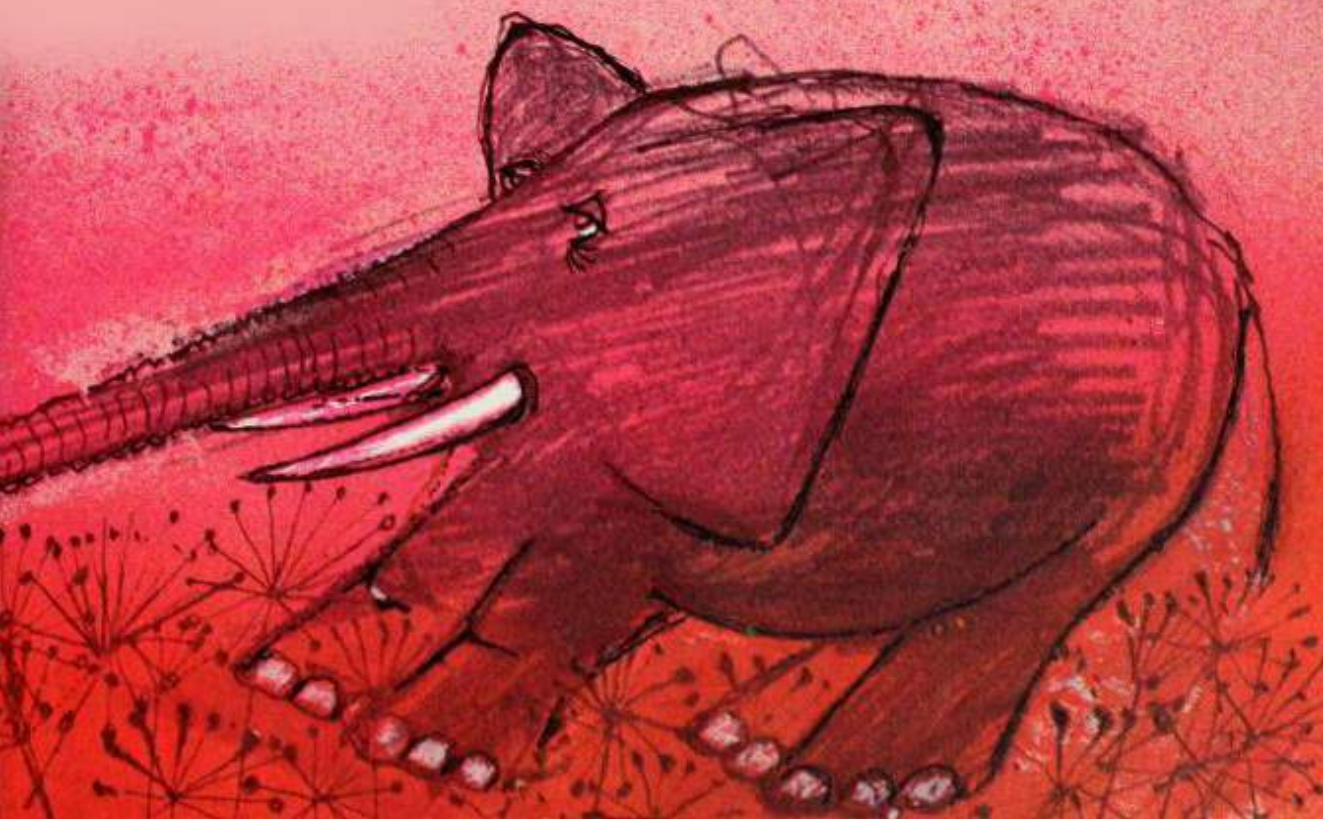
यह कहानी बच्चों को अच्छी लगेगी क्योंकि इस कहानी में एक छोटे से जीव ने अपनी बुद्धिमानी से दो बड़े और ताकतवर पशुओं को अच्छा चकमा दिया.



एक निराली रस्सा-कशी

नाइजीरिया की लोककथा





यह किताब उन अनगिनत गुणी कथा-वाचकों को
समर्पित है जिन्होंने इस कहानी को अलग-अलग
समय में, अलग-अलग लोगों के बीच,
अलग-अलग भाषाओं में, अलग-अलग ढंग से,
अफ्रीका के अलग-अलग गाँवों में प्रचलित किया.

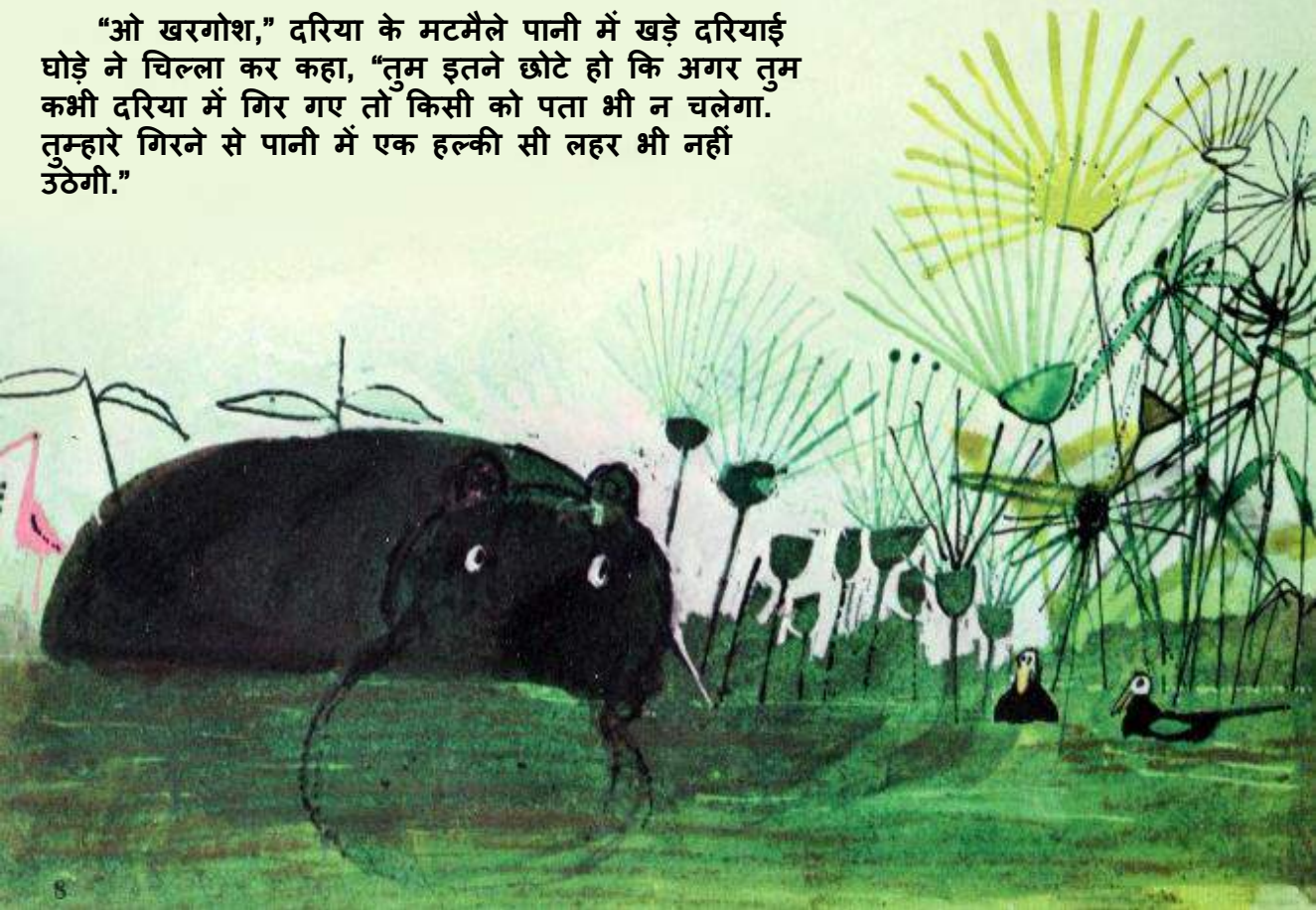




बहुत पुरानी बात है; उस समय कि जब तुम्हारे पिता के पिता के पिता के पिता का जन्म भी नहीं हुआ था. एक हरे-भरे घने जंगल में एक चौड़े, मटमैले दरिया के पास हाथी, दरियाई घोड़ा और खरगोश रहते थे. तीनों पड़ोसी थे.

दरियाई घोड़ा और हाथी बहुत बड़े थे, बहुत ताकतवर थे।
दोनों बेचारे खरगोश को खूब तंग करते थे। दोनों घमंडी थे
और अकसर खरगोश का अपमान करते थे।

“ओ खरगोश,” दरिया के मटमैले पानी में खड़े दरियाई
घोड़े ने चिल्ला कर कहा, “तुम इतने छोटे हो कि अगर तुम
कभी दरिया में गिर गए तो किसी को पता भी न चलेगा।
तुम्हारे गिरने से पानी में एक हल्की सी लहर भी नहीं
उठेगी।”





हाथी ने भी गरज कर कहा, “अरे खरगोश, सुना है सब लोग तुम्हें ‘बड़े कान वाला’ कह कर बुलाते हैं. बड़े कान, हा! तुमने मेरे कान देखे हैं! मेरे एक कान के नीचे ही दस-दस खरगोश आसानी से छिप जाँ. हो..हो..हो..हो...” हाथी जोर से हंसने लगा.

“तुम्हारी चाल भी कितनी बेढंगी है,” दरियाई घोड़े ने चिढ़ाते हुए कहा. “ज़मीन पर तो तुम्हारे पाँव टिक ही नहीं पाते. तुम इतने हल्के हो कि कोई छींक भी दे तो उड़कर दूर जा गिरो, बेचारा!”

“बिल्कुल सही कहा तुमने,” हाथी ने दरियाई घोड़े का साथ देते हुए कहा, “बेचारा जब फुदकते हुए चलता है तो घास का तिनका भी नहीं हिलता. और हमें देखो, जब हम चलते हैं तो जंगल के पेड़ भी कांपने लगते हैं और धड़ाम से गिर जाते हैं. जहां हमारे पाँव पड़ते हैं वहां ज़मीन में गड्ढे बन जाते हैं, ऐसे गड्ढे जिनमें अगर यह खरगोश गिर जाए तो फिर वो कभी दिखाई ही न दे.”

बस इसी तरह दिन-प्रतिदिन दोनों खरगोश को खूब सताते, उसकी हंसी उड़ाते, उसका अपमान करते.

लेकिन एक दिन ऐसा आया जब उस खरगोश ने निश्चय किया कि अब वह कोई अपमान न सहेगा; उल्टा दोनों घमंडी पशुओं को सबक सिखाएगा.

उसने मन-ही-मन तय किया कि वह उन दोनों को दिखा देगा कि सिर्फ बड़ा और शक्तिशाली होना पर्याप्त नहीं है.

वह दरियाई घोड़े और हाथी को सबक सिखाने की चाल सोचने लगा. उसने खूब सोचा. सोचते-सोचते उसके कान थरथराने लगे, उसके नथुने फड़फड़ाने लगे. अंत में उसने एक बढ़िया योजना सोची.





वह दरियाई घोड़े के पास आया. दरिया के मैले,
ठंडे पानी में खड़ा दरियाई घोड़ा ऊँघ रहा था.



“नमस्कार, दरियाई घोड़े, ” उसने बड़ी विनम्रता से कहा.

“अरे पिद्दे, तुम ने मेरा नाम लेकर मुझे बुलाया? इतना साहस? तुम्हें इतना भी नहीं पता कि अपने से बड़ों से कैसे बात करते हैं?” दरियाई घोड़े ने धमकाते हुए कहा.

“अगर मैं आपको रस्सा-कशी के मुकाबले में हरा दूँ तो क्या आप मुझे अपने सामान शक्तिशाली मान लेंगे?” खरगोश ने सम्मान के साथ कहा.

“तुम मुझे हराओगे? रस्सा-कशी के मुकाबले में? कैसी बेतुकी बात कर रहे हो? जानते भी हो कि मैं तुम से अरबों-खरबों गुना अधिक ताकतवर हूँ. देखो मुझे, मैं कितना बड़ा हूँ,” दरियाई घोड़े ने फुफकारते हुए कहा.

“शायद आप मेरी शक्ति को देख नहीं पा रहे हैं,” खरगोश ने मुस्कुरा कर कहा,
“क्या आप मुकाबला करेंगे?”

“जैसी तुम्हारी इच्छा,”
दरियाई घोड़े ने बेरुखी से कहा, “वैसे भी आज मेरे पास करने को कोई खास काम नहीं है.”

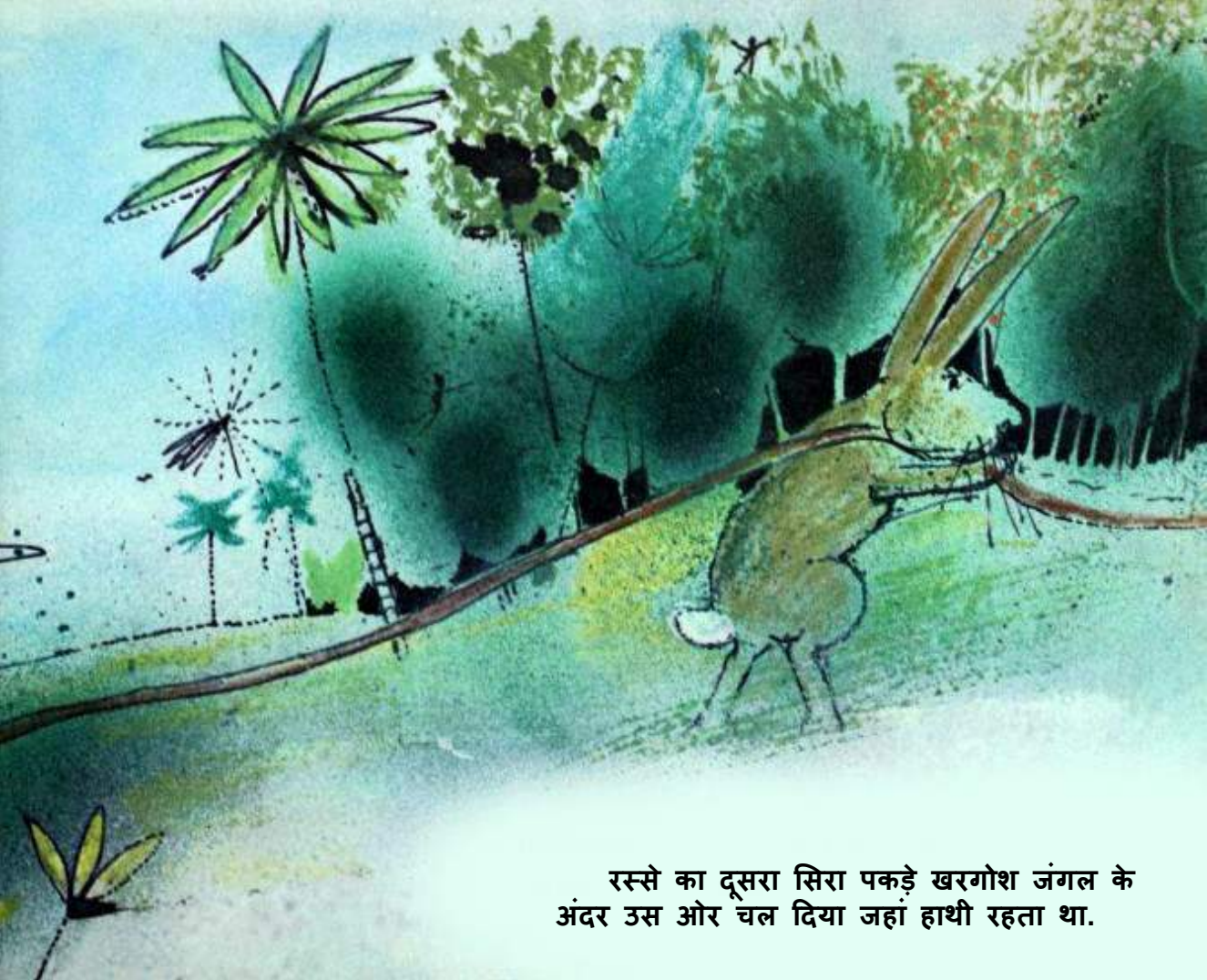


“ठीक है,” खरगोश बोला, “मेरे पास एक लंबा, मज़बूत रस्सा है। इस रस्से का एक सिरा आप पकड़ लें। मैं दूसरा सिरा पकड़ कर जंगल में अपने घर जाऊंगा। वहां पहुँच मैं रस्सा खींचूंगा। फिर आप भी रस्सा खींचना। हमारा मुकाबला शुरू हो जाएगा। अगर रस्सा खींच कर, आप मुझे दरिया तक ले आये तो आपकी जीत होगी। लेकिन अगर मैंने आपको जंगल के अन्दर खींच लिया तो मेरी जीत होगी। तब आपको मानना पड़ेगा कि मैं भी आपके समान शक्तिशाली हूँ। क्या आप यह शर्त स्वीकार करते हैं?”

“हाँ, स्वीकार करता हूँ.” दरियाई घोड़े ने बड़े घमंड से कहा।

“अब इस रस्से को अपने मुँह से पकड़ लें। घर पहुँच कर मैं रस्से को एक झटका दूंगा। आप समझ लेना कि मैं मुकाबले के लिए तैयार हूँ.” खरगोश ने कहा।





रस्से का दूसरा सिरा पकड़े खरगोश जंगल के
अंदर उस ओर चल दिया जहां हाथी रहता था.

“नमस्कार हाथी,” यहाँ भी खरगोश ने बड़ी विनम्रता से बात की।

हाथी ने खरगोश को देखा, अपनी सुंड उठाई और अकड़ कर बोला, “किस से बात कर रहे हो? मुझ से? तुम तो इतने छोटे हो कि दिखाई भी नहीं पड़ते। तुमने मुझ से बात करने का साहस कैसे किया?”

“अगर रस्सा-कशी के मुकाबले में मैं आपको हरा दूँ तो क्या आप मुझे अपने समान ताकतवर मान लेंगे?” खरगोश बोला।

“हो...हो...हो...क्या बात है? ऐसा चुटकुला तो मैं आज पहली बार सुन रहा हूँ,” हाथी ने जोर से हँसते हुए कहा, “तुम मुझे हराओगे? रस्सा-कशी में? मैं तुमसे छह हजार गुना बड़ा हूँ और अरब गुना अधिक ताकतवर हूँ।”

“शायद मेरी ताकत आपको दिखाई नहीं दे रही,” खरगोश बोला। वो अपनी हंसी रोक न पा रहा था। “क्या आप मेरे साथ मुकाबला करेंगे?”

उसकी बात सुन हाथी ने बड़े अभिमान के साथ कहा, “हाँ मैं मुकाबला करूँगा। ऐसा सरल मुकाबला तो मैंने आज तक नहीं किया।”

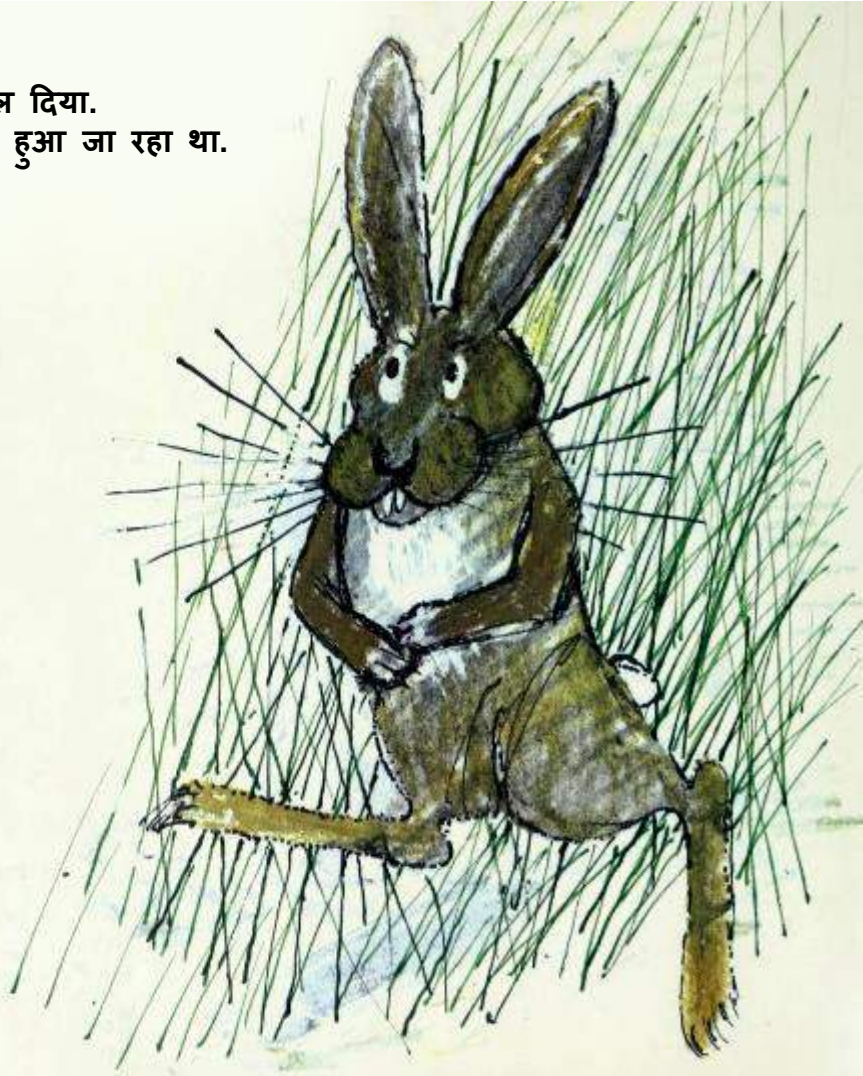
“मेरे पास यह लंबा, मज़बूत रस्सा है। इसे आप पकड़ लें। मैं दरिया की ओर जाऊँगा। वहाँ पहुँच कर मैं रस्से को एक झटका दूँगा। आप समझ लेना कि मैं तैयार हूँ। आप रस्सा खींचना। मुकाबला शुरू हो जाएगा। अगर आप खींच कर मुझे जंगल के बीच यहाँ ले आये तो आप की जीत होगी। लेकिन अगर मैंने आपको दरिया तक खींच लिया तो मेरी जीत होगी। तब आपको स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं भी आपके समान शक्तिशाली हूँ,” खरगोश ने कहा।

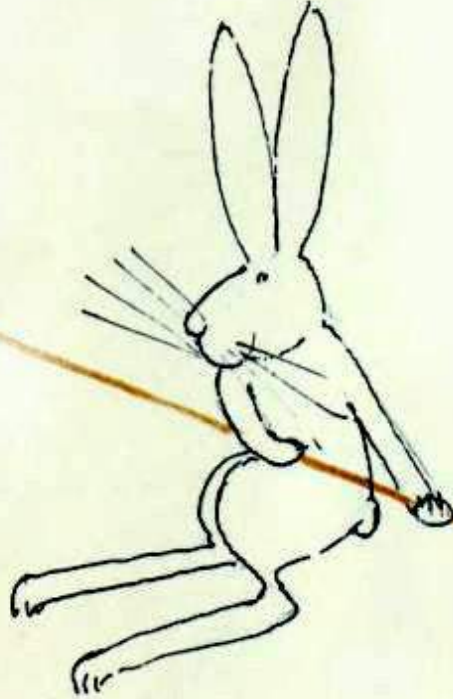




हाथी काफी बोर लग रहा था. उसने रस्से का सिरा थाम लिया.

खरगोश दरिया की ओर चल दिया.
वह बहुत खुश था और फुदकता हुआ जा रहा था.





आधे रास्ते पहुँच कर उसने रस्से को ज़ोर का झटका दिया.

दरिया में खड़े दरियाई घोड़े ने रस्से
का झटका महसूस किया और झट से
रस्सा खींचने लगा.





घने जंगल के अंदर हाथी ने भी झटका महसूस किया। वह भी फट से रस्सा खींचने लगा। फिर निराली रस्सा-कशी शुरू हो गयी।

हर एक समझ रहा था कि दूसरे सिरे पर खरगोश रस्सा खींच रहा था। हर एक को लग रहा था कि वह बड़ी आसानी के साथ यह मुकाबला जीत जाएगा। हर एक सोच रहा था कि उसके खींचने पर खरगोश ऐसे उड़ता हुआ आयेगा जैसे मछुआरे के कांटे में फंसी छोटी सी मछली पानी से बाहर आती है।

दरियाई घोड़े ने रस्सा खींचा। हाथी ने रस्सा खींचा। रस्सा एकदम कस गया। पर हुआ कुछ भी नहीं। न हाथी अपनी जगह से हिला, न दरियाई घोड़ा पानी से बाहर आया।

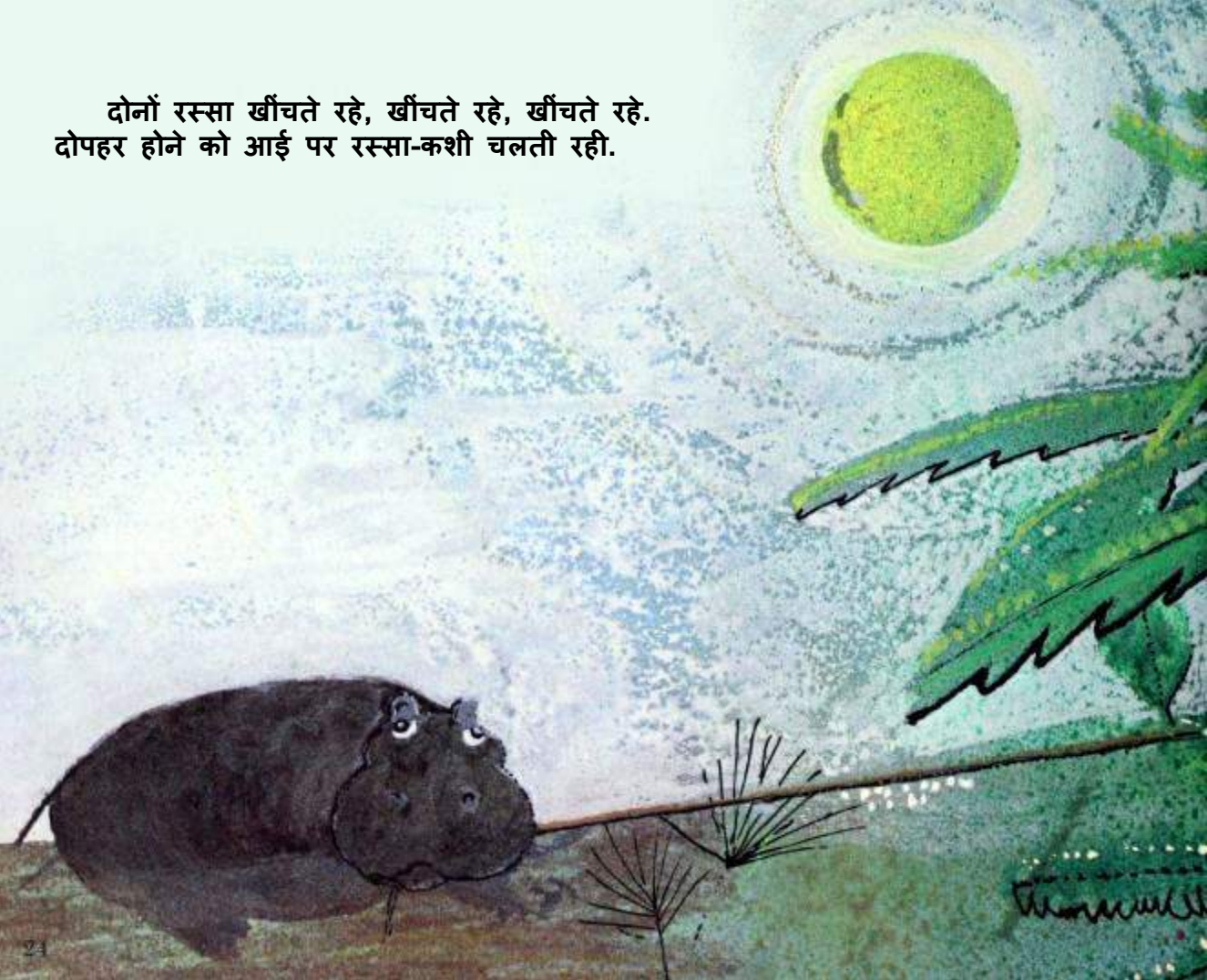
हाथी ने और ज़ोर लगाया। दरियाई घोड़े ने और ज़ोर लगाया।

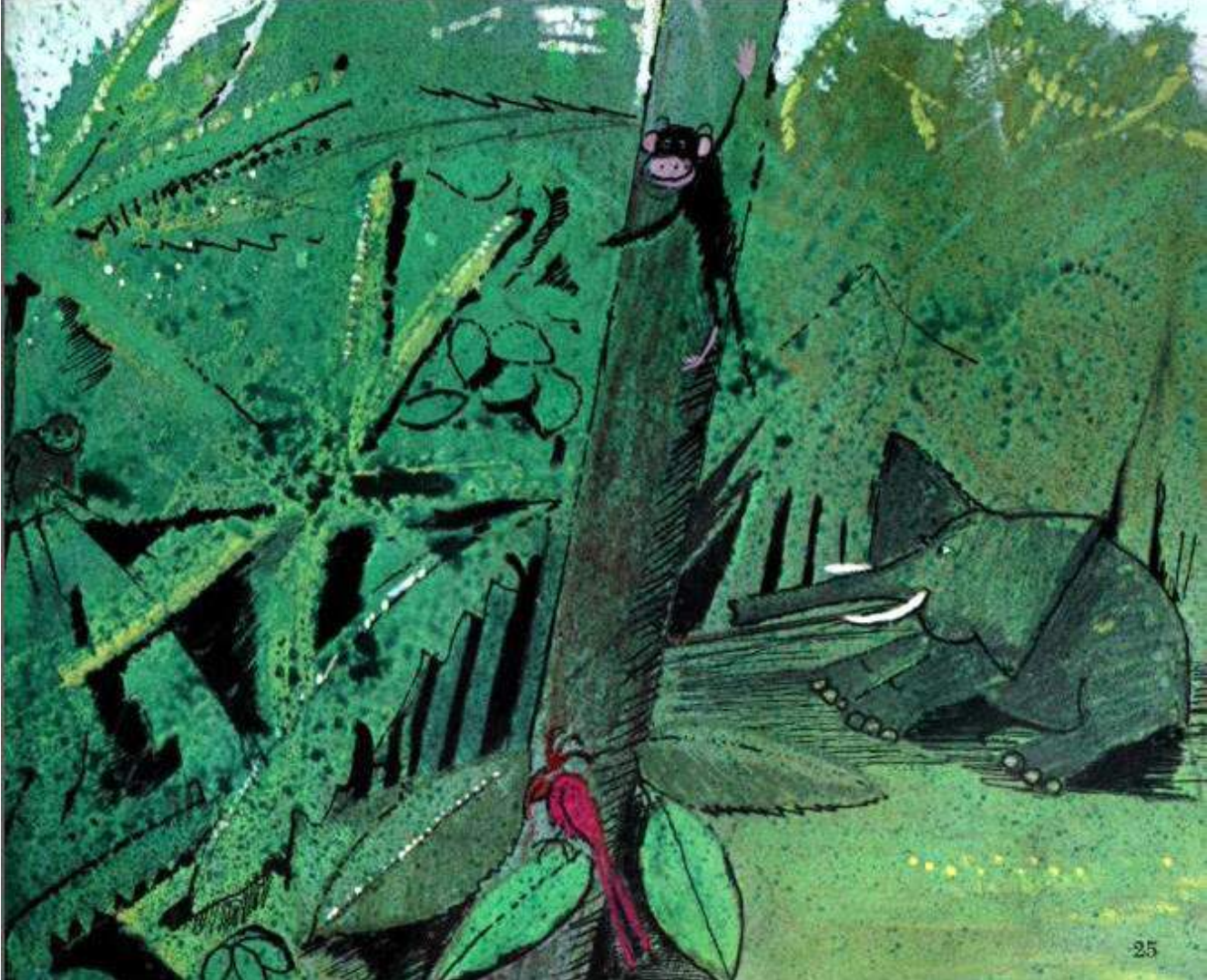


हर एक सोच रहा था कि जल्दी ही खरगोश उड़ता हुआ उसके पास आ पहुंचेगा. खरगोश मूर्ख था जो ऐसा मुकाबला कर रहा था. वह उनके समान शक्तिशाली कैसे हो सकता था?



दोनों रस्सा खींचते रहे, खींचते रहे, खींचते रहे.
दोपहर होने को आई पर रस्सा-कशी चलती रही.





सूर्य अस्त होने लगा.







They pulled it within.







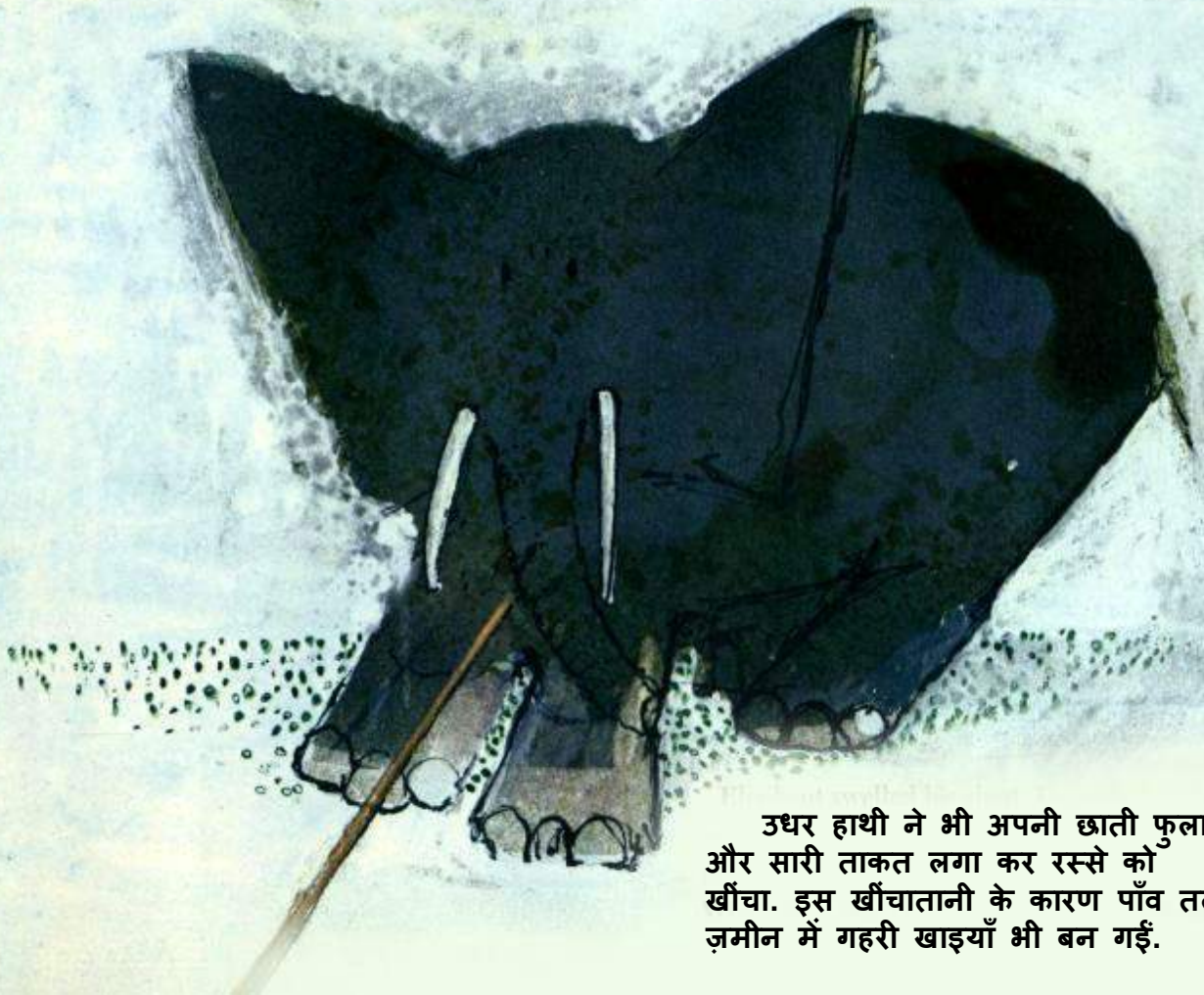
फिर आकाश में चाँद चमकने लगा. चाँदनी रात में भी दोनों रस्सा खींचते रहे. रस्सा कसा ही रहा. प्रत्येक इस बात से हैरान था कि वह खरगोश को अपनी ओर ज़रा सा भी नहीं खिसका पाया था.

दरियाई घोड़े ने दरिया के तल पर अपने पाँव पूरी तरह जमा दिये और रस्से को जोर से खींचा, और खींचा, और खींचा.

इस खींचातानी में उसने खूब पाँव चलाये. दरिया के तल से कीचड़ की लहरें सी उठीं और पानी में फ़ैल गईं. दरिया का मटमैला पानी और मटमैला हो गया.

पर रस्सा वैसे ही कसा रहा. दरियाई घोड़ा कुछ समझ न पाया कि क्या हो रहा था.





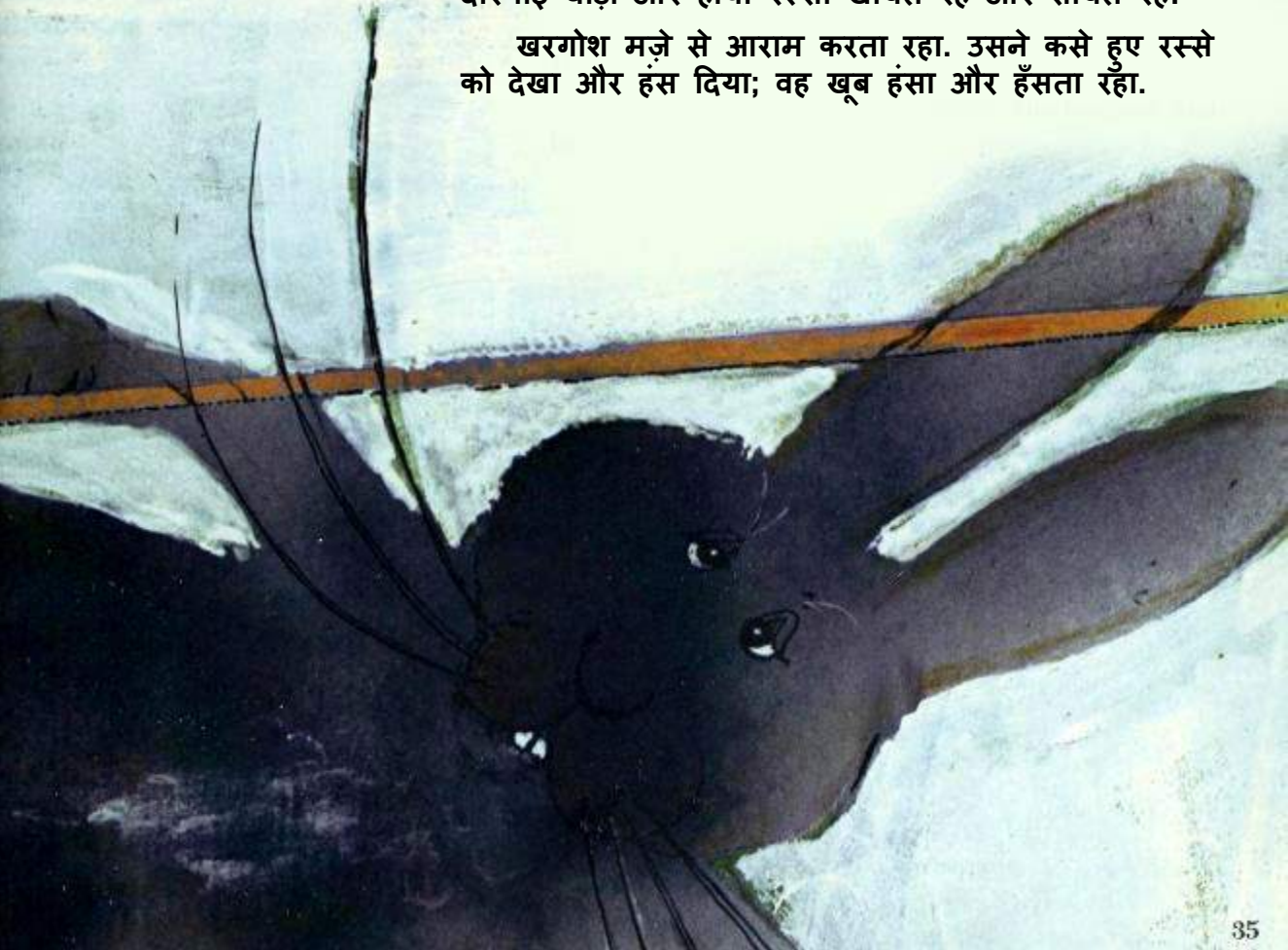
उधर हाथी ने भी अपनी छाती फुलाई
और सारी ताकत लगा कर रस्से को
खींचा. इस खींचातानी के कारण पाँव तले
ज़मीन में गहरी खाइयाँ भी बन गईं.

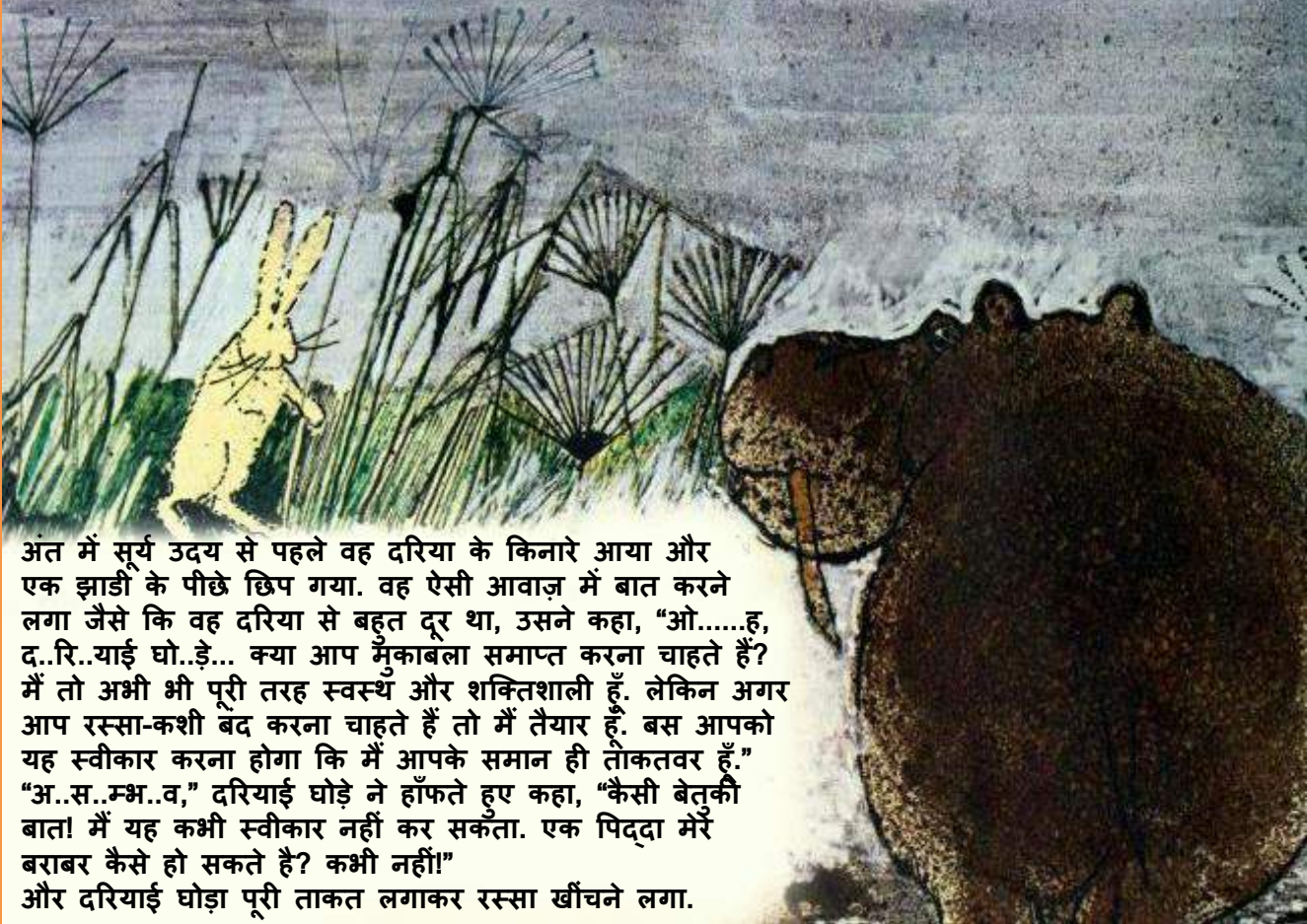
‘लेकिन खरगोश खिसक कर आगे
क्यों नहीं आया?’ हाथी सोच में पड़ गया.



इस तरह सारा दिन और सारी शाम और फिर सारी रात
दरियाई घोड़ा और हाथी रस्सा खींचते रहे और सोचते रहे.

खरगोश मज़े से आराम करता रहा. उसने कसे हुए रस्से
को देखा और हंस दिया; वह खूब हंसा और हँसता रहा.





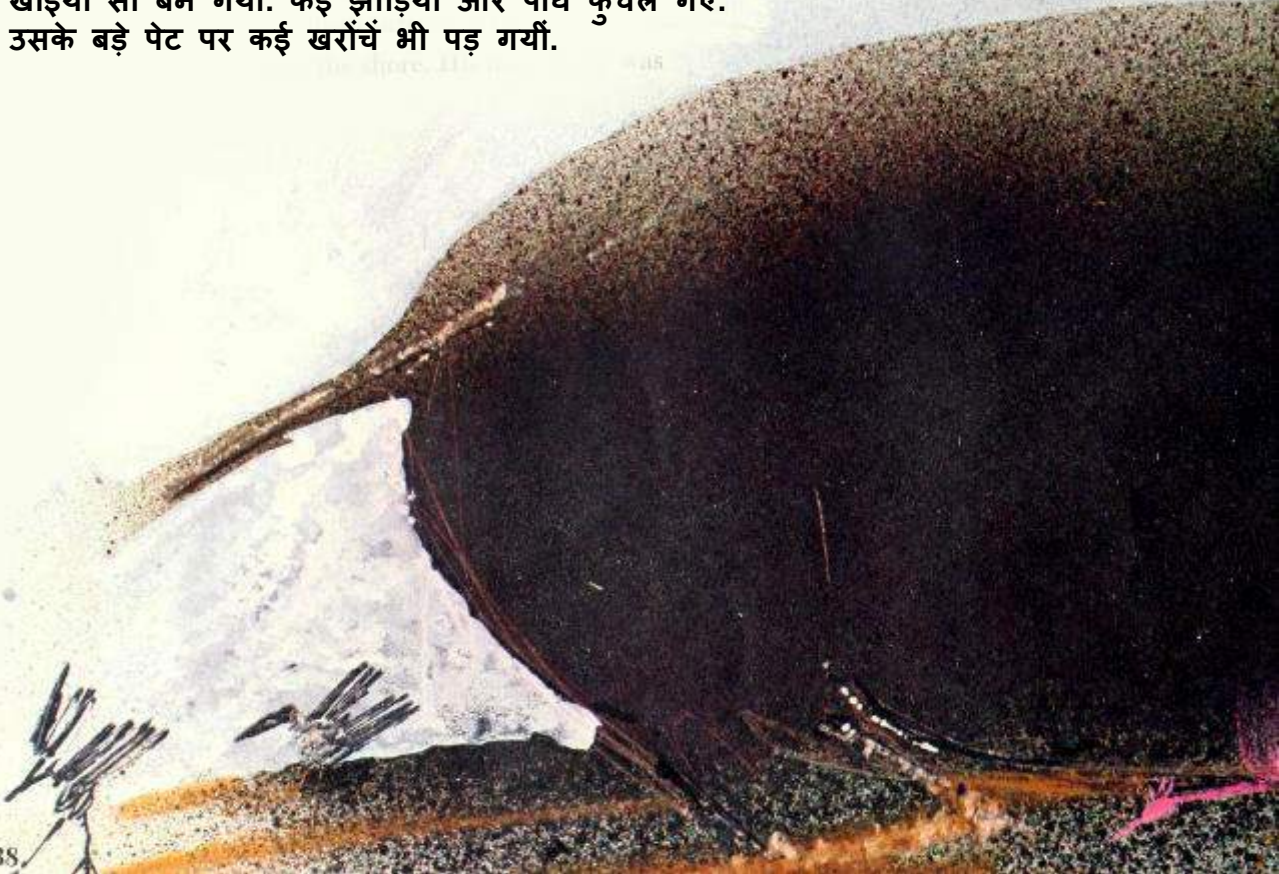
अंत में सूर्य उदय से पहले वह दरिया के किनारे आया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया. वह ऐसी आवाज़ में बात करने लगा जैसे कि वह दरिया से बहुत दूर था, उसने कहा, “ओ.....ह, द..रि..याईं घो..ड़े... क्या आप मुकाबला समाप्त करना चाहते हैं? मैं तो अभी भी पूरी तरह स्वस्थ और शक्तिशाली हूँ. लेकिन अगर आप रस्सा-कशी बद करना चाहते हैं तो मैं तैयार हूँ. बस आपको यह स्वीकार करना होगा कि मैं आपके समान ही तोकतवर हूँ.” “अ..स..म्भ..व,” दरियाईं घोड़े ने हाँफते हुए कहा, “कैसी बेतुकी बात! मैं यह कभी स्वीकार नहीं कर सकता. एक पिद्दा मेरे बराबर कैसे हो सकते हैं? कभी नहीं!” और दरियाईं घोड़ा पूरी ताकत लगाकर रस्सा खींचने लगा.

खरगोश मुस्करा दिया. चुपचाप फुदकते हुए वह हाथी की ओर चल दिया. हाथी के निकट पहुँच कर वह एक बड़े पेड़ के पीछे छिप गया. यहाँ भी वह ऐसे बात करने लगा जैसे बहुत दूर खड़ा था. “ओ...ह हा...थी.... क्या आप मुकाबला बंद करना चाहते हैं? मैं तो अभी भी स्वस्थ और ऊर्जा से भरा हूँ. लेकिन अगर आप रुकना चाहते हैं तो मैं रस्सा-कशी बंद कर देता हूँ. बस आपको यह मान लें कि मैं आप के समान ही शक्तिशाली हूँ.”

“क...भी....नहीं,” हाथी चिल्लाया, “तुम छोटे से जीव मेरे समान! न...हीं.”



गुस्से से भरा हाथी अपनी सारी ताकत लगा कर
रस्से को ज़ोर से खींचने लगा. दरियाई घोड़ा खिंचता
हुआ दरिया से बाहर आ गया. विशाल और भारी-भरकम
दरियाई घोड़े के रेतीले किनारे पर खिसकने से गहरी
खाइयाँ सी बन गयीं. कई झाड़ियाँ और पौधे कुचले गए.
उसके बड़े पेट पर कई खरोंचें भी पड़ गयीं.



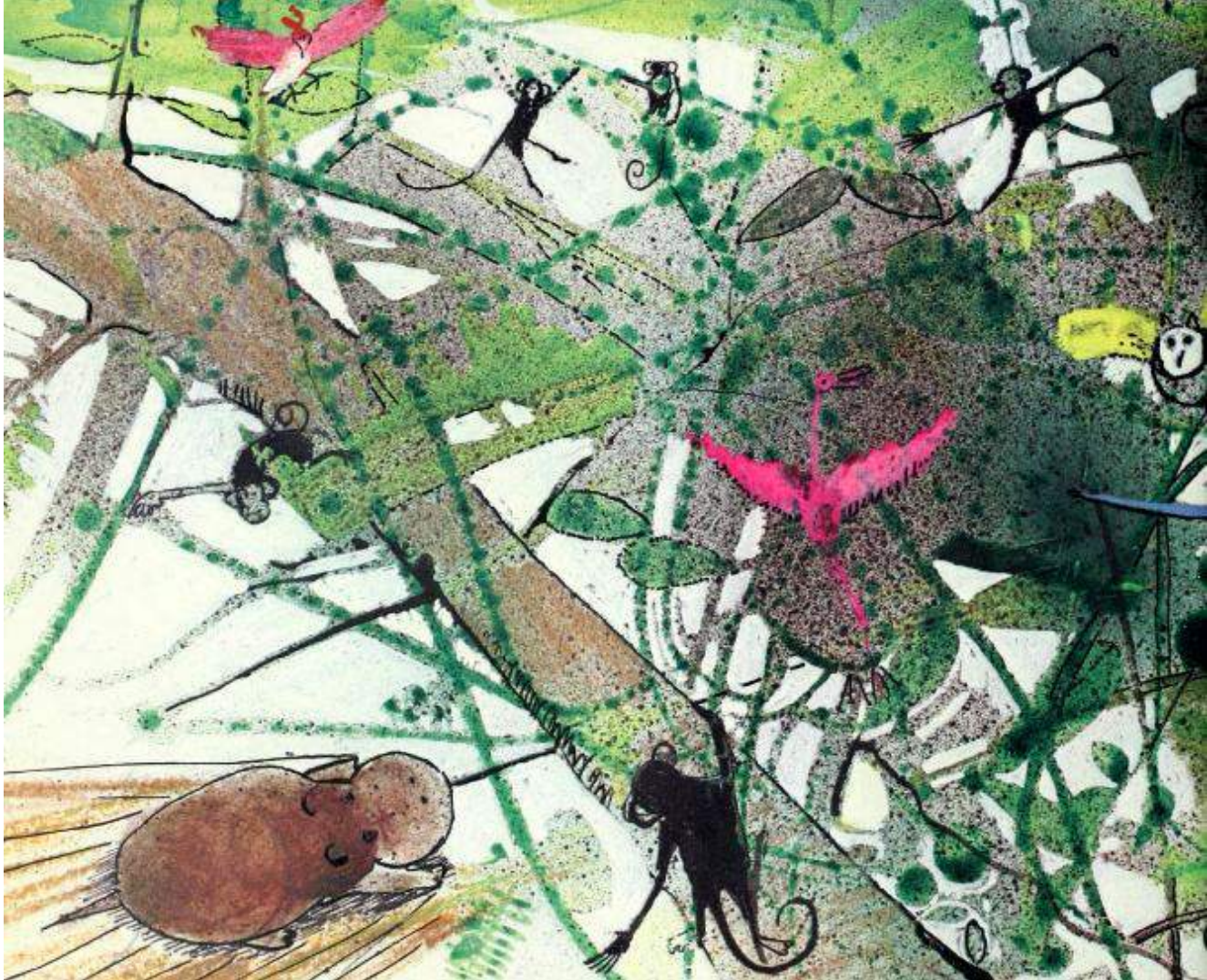


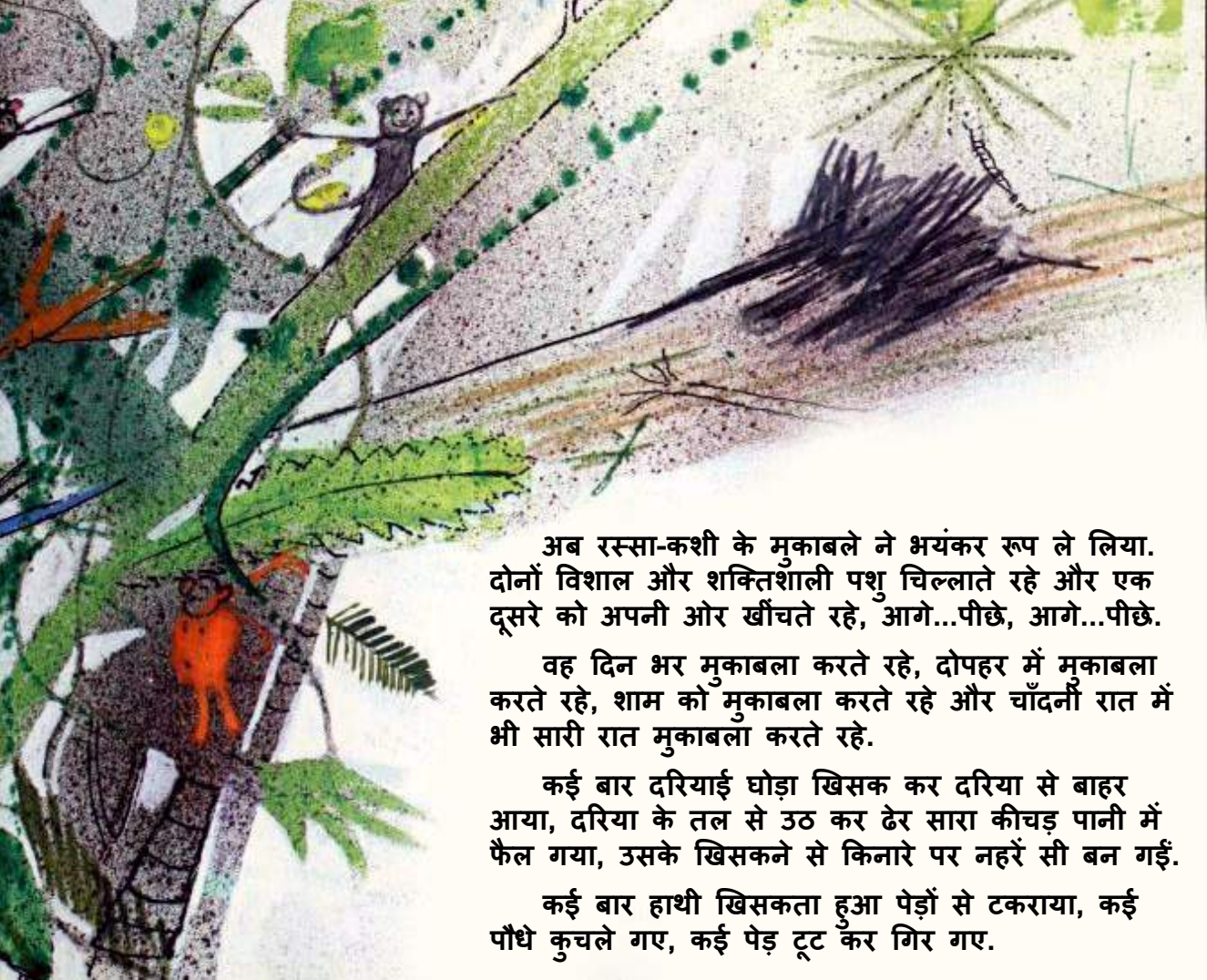
दरियाई घोड़ा गुस्से से भर गया. वह हांफने लगा,
फुफकारने लगा, चिल्लाने लगा. उसने अपने पाँव ज़मीन
में गड़ा दिए, फिर थोड़ा पीछे झुका और ग्यारह गुना
अधिक ताकत लगा कर रस्सा खींचने लगा.

दरियाई घोड़े के इस तरह खींचने से हाथी उसकी
ओर खिंचता आया. पेड़-पौधों से टकराता हुआ आगे
खिसकने लगा.

अब हाथी का गुस्सा सातवें आसमान पर था.
वह भी पूरी ताकत लगा कर रस्सा थामे रहा.







अब रस्सा-कशी के मुकाबले ने भयंकर रूप ले लिया। दोनों विशाल और शक्तिशाली पशु चिल्लाते रहे और एक दूसरे को अपनी ओर खींचते रहे, आगे...पीछे, आगे...पीछे।

वह दिन भर मुकाबला करते रहे, दोपहर में मुकाबला करते रहे, शाम को मुकाबला करते रहे और चौदनी रात में भी सारी रात मुकाबला करते रहे।

कई बार दरियाई घोड़ा खिसक कर दरिया से बाहर आया, दरिया के तल से उठ कर ढेर सारा कीचड़ पानी में फैल गया, उसके खिसकने से किनारे पर नहरें सी बन गईं।

कई बार हाथी खिसकता हुआ पेड़ों से टकराया, कई पौधे कुचले गए, कई पेड़ टूट कर गिर गए।

इधर दोनों विशाल जीव आपस में उलझे हुए थे, उधर खरगोश मज़े से बैठा सब देख रहा था। वह अपनी हंसी रोक नहीं पा रहा था। हँसते-हँसते वह ज़मीन पर लोट-पोट हो रहा था।

अगले दिन, सुबह होने से पहले, वह फिर से चुपके से रेंगते हुए बारी-बारी दोनों के पास आया और बोला, “क्या मुकाबला रोकना चाहते हैं? क्या आप यह नहीं मानते कि मैं आपके समान ही ताकतवर हूँ?”

घायल और बुरी तरह थका हुआ दरियाई घोड़ा रस्सा खींचता रहा। फिर कीचड़ में फिसल कर वह गिर गया।

हाथी भी बहुत थक चुका था, उसके शरीर पर भी कई चोटें लग गई थीं। वह मुश्किल से ही खड़ा हो पा रहा था।

पर दोनों ही खूब अड़ियल और ज़िद्दी थे। दोनों में से कोई भी खरगोश को अपने समान ताकतवर मानने को तैयार न था।

सूर्य उदय हुआ। दोनों मुकाबला करते रहे। रस्सा खींचते-खींचते वह सोच रहे थे कि खरगोश इतने लंबे समय तक कैसे मुकाबला कर पा रहा था। क्या सच में वह इतना शक्तिशाली था?

‘क्या खरगोश किसी जादू का प्रयोग कर रहा है? मुझे जा कर देखना चाहिए,’ ऐसा दरियाई घोड़े ने सोचा। वह नदी के बाहर आया और बड़ी सावधानी के साथ धीरे-धीरे लड़खड़ाते हुए उस ओर चला जहां खरगोश मिल सकता था। थोड़ी दूर चलने के बाद वह रुक जाता और रस्से को लपेट लेता था ताकि रस्सा ढीला न पड़े।



हाथी भी बड़े असमंजस में था. उसने भी सोचा कि वह स्वयं आगे जाकर देखेगा कि क्या हो रहा था. वह भी धीरे-धीरे लड़खड़ाता हुआ उधर चला जहां खरगोश मिल सकता था. वह भी रुक-रुक कर रस्से को लपेटते जा रहा था ताकि रस्सा कसा रहे.

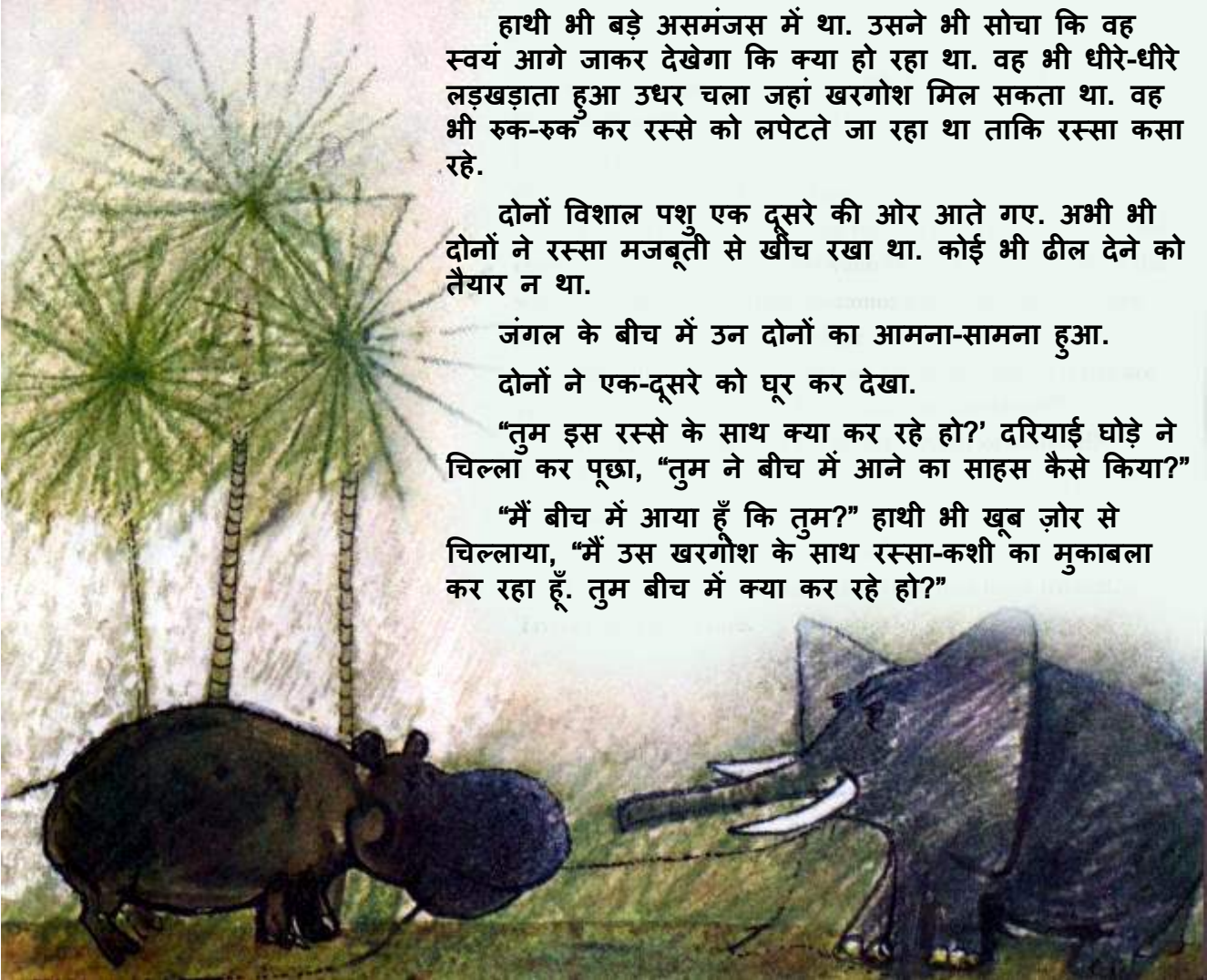
दोनों विशाल पशु एक दूसरे की ओर आते गए. अभी भी दोनों ने रस्सा मजबूती से खींच रखा था. कोई भी ढील देने को तैयार न था.

जंगल के बीच में उन दोनों का आमना-सामना हुआ.

दोनों ने एक-दूसरे को घूर कर देखा.

“तुम इस रस्से के साथ क्या कर रहे हो?” दरियाई घोड़े ने चिल्ला कर पूछा, “तुम ने बीच में आने का साहस कैसे किया?”


“मैं बीच में आया हूँ कि तुम?” हाथी भी खूब ज़ोर से चिल्लाया, “मैं उस खरगोश के साथ रस्सा-कशी का मुकाबला कर रहा हूँ. तुम बीच में क्या कर रहे हो?”





दोनों एक-दूसरे को गुस्से से घूरने लगे.

तब अचानक उन्हें सारी बात समझ में आई.
दोनों विशाल पशुओं को समझ में आया कि
खरगोश ने उन्हें बुद्धू बनाया था, एक छोटे से
खरगोश ने अपनी चाल में उन्हें फंसा लिया था.



दोनों आग-बबूला हो गये. दोनों दनदनाते हुए चले और खरगोश को जंगल में ढूँढने लगे. उन्होंने कई पेड़ गिरा दिये और कई पौधे कुचल दिये और कई झाड़ियों को मसल दिया, वह खूब चिल्लाए, खूब चिंघाड़े.

पर उन्हें खरगोश कहीं भी दिखाई न दिया.

खरगोश वहां था ही नहीं. वह तो बहुत दूर जा चुका था. फुदकता-फुदकता, अब वह अपने लिए एक नया घर ढूँढ रहा था. वह बहुत प्रसन्न था और अपनी चतुराई पर मुस्कुरा रहा था. वह छोटा अवश्य था, पर अपनी चतुराई से उसने हाथी और दरियाई घोड़े दोनों को मात दे दी थी; जंगल के दो सबसे विशाल और ताकतवर पशुओं को उसने अपनी बुद्धिमानी से चकमा दे दिया था.



